"वासना"

- "ऋषि मुनियों की संतान ! "परमात्मा" को त्याग जानवरों का संग पसंद करे नतिजा किसी दूसरे ने तो भुगतना नहीं ! वासना जून का निर्धारण करतीं हैं । निश्चित नियम हैं । गुरू साहिब ने स्पष्ट इशारा दिया है
- "अंति कालि लक्ष्मी सिमरै ऐसी चिन्ता महि जे मरै ।। सरप जोनि वलि वलि अउतरै ।।1।। अरी बाई गोबिंद नामु मति बीसरै ।। रहउ।। अंति काल जो स्त्री सिमरै ऐसी चिन्ता महि

जे मरै ।। बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ।।2।। अंति काल जो लड़िके सिमरै ऐसी चिन्ता महि जे मरै ।। सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ।।3।। अंति काल जो मंदर सिमरै ऐसी चिन्ता महि जे मरै ।। प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ।।4।। अंति काल जो नाराइण सिमरै ऐसी चिन्ता महि जे मरै ।। बदति तिलोचन ते नर मुकता पींताबर वा के रिदै बसै ।।5।।2।।"

(526)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(अन्त काल अर्थात मनुष्य जन्म में)

संगत जीव के "उत्थान अथवा पतन" में बहुत बडा रोल अदा करती है ! अन्तर में शब्द (गुरू केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष) का संग और बाहर भी शब्द + केवल "सच्चे" परमार्थी का ही संग जीव के लिये कल्याणकारी निश्चित साधन है । केवल भौतिक समृद्धि आत्मा के कल्याण का विचार तो कल्पना में भी सम्भव नहीं हो सकती हाँ "पतन" का साधन अवश्य निश्चित समझिये । जो लोग मुर्दो को कब्रो में सजा कर रखने का धंधा आज तक कर रहे हैं ! उन से आत्मिक कल्याण कल्पना में भी न जान सकोगे ! आत्मा

शारीरिक मोह को अन्त तक कभी नहीं त्याग पाती । अतः प्रेत इत्यादि निचली जूनों में गिर कर इन कब्रो में फंसी रहती हैं । दुनिया में विकास का "दावा" करने वाले मनुष्यों का इस से भी विकृत हशर प्रत्यक्ष देखने में आता है !

मनुष्य जन्म केवल परमात्मा तक पहुंचने का "साधन" मात्र है । जो आत्मा इस दुर्लभ कीमती जन्म का दुरुपयोग करती हैं अर्थात इसे मिली प्राणशक्ति शैतान अर्थात संसार पर खर्च कर देती हैं उस का उसे बहुत बडा जुर्माना सजा भुगतना पड़ता है । "कूक पुकार को न सुने ओत्थे पकड ओह टोहड़या ।"

"सम्बन्धित रूहें" विकृत जूनों में गुम हो चुकी हैं । फंदा शैतान का आप के गले में भी पड़ चुका है । निरन्तर घसीटता हुआ आखिरी गिन्ती गिन रहा है । "प्राणी तू आयो लाहा लेण लगा कित कुफकडे सब मुकदी चली रेण । कुदम करे पशु पखिया दिसै नाही काल !" उस से पहले कि वो अपना काम करे तू अपना कार्य पूर्ण कर ले (जो तूने अभी तक शुरू भी नहीं किया !)

विकृत जूनों में आप के नाम की तख्तियां लग चुकी हैं इंतज़ार हो रही है केवल आप का पहुंचना बाकी है ! पूंजी खत्म होती जा रही है एक प्राण की भी गारंटी कोई नहीं दे

सकता । फिर भी "काम" से फुरसत नहीं मिलती । इस काम को तू "निजी शत्रु" जान । जो क्रोध बन कर सूक्ष्म रूप से मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों में समाया रहता है । इसे तू जड़ से उखाड़ फेंक । सब पापों की जड़ काम अर्थात वासना (कामना) है जो कभी नहीं मिटती केवल बदलती है । इस की दवाई "केवल" शब्द (नाम + प्रकाश) अथवा परमात्मा का शौक है (केवल निर्मल हृदय से)

"निर्मल मन जन सो मोहे पावाए मोहे कपट छल छिद्र न भावा ।"

इस पत्र को चालान की कापी समझना । तीनो मुल्कों की सभी ताकतें मिल कर इस की एक मात्रा भी आगे पीछे करने में सक्षम न हो सकेगी निश्चित समझिऐ ।

19.04.2004

TO BE CONTINUED.....